8

मरे हुओं का जी उठना

''इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्होंने भलाई की है, वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है, वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे ''(यूहन्ना 5:28, 29)।

कालांतर की सभ्यताओं के धर्मों में मरे हुओं के जी उठने से सम्बन्धित शिक्षा में अन्तर तो था, परन्तु उनमें से अधिकतर का विश्वास किसी न किसी प्रकार मृत्यु के बाद जीवन में अवश्य था। मिस्र के लोग अपने राजाओं और शासकों के शवों को तैयार कर उनकी कब्रों में वे चीज़ें रखते थे, जो उनके विचार के अनुसार मृत्यु के बाद के जीवन के लिए उपयोगी हो सकती थीं। यूनानी लोगों में ''देहांतर'' होने की शिक्षा पाई जाती थी, जिसे आत्मा की यात्रा कहा जाता था। यहूदी पवित्र शास्त्र ने मरे हुओं के जी उठने के सम्बन्ध में संकेत तो दिया परन्तु कोई स्पष्ट प्रकाशन नहीं दिया। शायद यही कारण रहा कि दो मुख्य गुट बन गए: सदूकी, जो मरे हुओं के जी उठने में विश्वास नहीं रखते थे (मत्ती 22:23), और फरीसी जो यह विश्वास रखते थे (प्रेरितों 23:8)। बिना प्रकाशन के प्राचीन संसार ने इस जीवन के बाद के बारे में अपना ही तरीका बना लिया था, परन्तु उसमें इस आशा को बनाने का ठोस आधार नहीं था (इफिसियों 2:12; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13)।

नया नियम स्पष्ट प्रमाण देता है कि मरे हुओं का जी उठना होगा। इसके विवरण के लिए इस्तेमाल किए गए शब्द *anastasis* (मत्ती 22:23; लूका 14:14; यूहन्ना 5:29; प्रेरितों 1:22; 2:31), *anistemi* (मत्ती 17:9; 20:19; लूका 16:31; प्रेरितों 2:24; 13:33) और *egeiro* (यूहन्ना 5:21; 12:1, 17; प्रेरितों 3:15) हैं। यद्यपि आवश्यक नहीं कि सभी मरे हुओं का जी उठना हो, परन्तु ऐसा अर्थ होने पर संदर्भ को ध्यान में रखकर इस्तेमाल करने से यह निष्कर्ष निकालना आसान हो जाता है।

कुछ आयतें जो सिखाती हैं कि मरे हुओं का जी उठना होगा, वे हैं यूहन्ना 5:25–29; प्रेरितों 24:15; और 1 कुरिन्थियों 15:22.

क्या यीशु जी उठा था?

यीशु का जी उठना और सभी मृतकों का जी उठना नये नियम का एक महत्वपूर्ण विषय है। बाइबल बड़ी दृढ़ता से यह दावा करती है कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा था और यह कि हम मरे हुओं में से जी उठेंगे (1 पतरस 1:3, 4)। प्रेरित यीशु के आश्चर्यकर्मों

तथा शिक्षाओं से प्रभावित थे। उसकी मृत्यु ने उन्हें उलझन में डाल दिया और उन्हें निराश कर दिया था, परन्तु उसके जी उठने से उन्हें विश्वास हो गया कि वही मसीहा अर्थात परमेश्वर का पुत्र है (प्रेरितों 2:32-36)। यीशु के जी उठने की शिक्षा उनके लिए विशेष थी, जैसे हमारे लिए है; क्योंकि यदि यीशु जी नहीं उठा था, तो वह मसीह नहीं है और हम अभी भी अपने पापों में हैं और मसीह में आशा का तथा हमारे जी उठने का कोई आधार नहीं। पौलुस ने इसे इस प्रकार कहा है:

> यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो। वरन जो मसीह में सो गए हैं, वे भी नाश हुए। यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं (1 कुरिन्थियों 15:17-19)।

प्रारम्भिक कलीसिया के संदेश का सार यीशु का पुनरुत्थान था (प्रेरितों 1:22; 2:31; 4:2, 33; 17:18, 32; 23:6)। यदि पौलुस के प्रचार से किसी प्रकार का कोई संकेत मिलता है (प्रेरितों 24:15, 21; 1 कुरिन्थियों 15:12) तो यह कलीसिया का सबसे महत्वपूर्ण विषय था। कलीसिया का प्रयास जी उठने के विश्वास दिलाने वाले वैज्ञानिक प्रमाण देना नहीं था, जो सम्भव नहीं होना था; बल्कि उन्होंने अपनी गवाही दी कि उन्होंने यीशु को मरे हुओं में से जी उठे देखा है (प्रेरितों 2:32; 4:33; 1 कुरिन्थियों 15:4-8)-जी उठने के बारे में पवित्र शास्त्र में भविष्यवाणियां की गई थीं (प्रेरितों 2:29-31; 1 कुरिन्थियों 15:4)। इस गवाही के आधार पर, कलीसिया रोमी संसार तथा उस समय के ज्ञात संसार के दूरस्थ भागों में जंगल की आग की तरह फैल गई (कुलुस्सियों 1:23)। उनकी गवाही की सत्यता का प्रमाण उनकी शहादत से मिला।

उसका पुनरुत्थान कैसा था?

क्योंकि हमारा पुनरुत्थान यीशु के पुनरुत्थान जैसा होगा, इसलिए उसके पुनरुत्थान से समझ आ जाएगी कि हमारा पुनरुत्थान कैसा होगा।

यीशु की जी उठी देह कैसी थी? कुछ लोगों का मत है कि यीशु की देह, जिसे कब्र में रखा गया था जी नहीं उठी, बल्कि उसे परमेश्वर ने वहां से हटा दिया था। इसके बाद यीशु ने एक आत्मिक अर्थात स्वर्गीय रूप ले लिया। जब उसके अनुयायियों ने उसे देखा तो उसने अपने आप को देह में बना लिया, ताकि उन्हें पता चल सके कि उन्होंने उसी को देखा है।

दूसरे लोगों का यह विचार है कि यीशु की देह जी तो उठी थी परन्तु एक महिमामय अर्थात आत्मिक देह में बदल गई थी। यह वही देह थी जिसे गाड़ा गया था, परन्तु जी उठी देह शारीरिक न होकर आत्मिक देह थी। उसकी जी उठी देह वैसी ही महिमायुक्त, आत्मिक देह बन गई जैसे मसीही लोग अपने जी उठने के बाद बनेंगे।

कुछ लोग यह सिखाते हैं कि शारीरिक देह धारण करके यीशु ने अपने आत्मिक अस्तित्व को सदा के लिए त्याग दिया, जो पृथ्वी पर आने से पहले उसका था। वह यह

बहस करते हैं कि उसने एक महिमायुक्त, जी उठी मानवीय देह को सदा के लिए पाने के लिए उस आत्मिक अस्तित्व को अनन्तकाल के लिए त्याग दिया। इस देह को धारण करना पापी मनुष्य के लिए उसके बलिदान का एक भाग था।

और भी हैं जो यह मानते हैं कि यीशु की देह कब्र में रखी शारीरिक देह ही जी उठी थी। वह इस देह में स्वर्ग के अभौतिक आयाम में ऊपर उठाए जाने तक था, और फिर उसने इसे छोड़ दिया।

पहले दो विचार आम तौर पर यह समझाने के लिए हैं कि जी उठे यीशु को कुछ लोगों ने पहचाना क्यों नहीं था (यूहन्ना 21:4) और किस प्रकार वह बन्द दरवाज़ों में से निकल जाता था (यूहन्ना 20:19)। इन घटनाओं से यह सुझाव मिलता है कि उसकी देह शारीरिक न होकर आत्मिक थी; परन्तु, अपनी मृत्यु से पहले भी तो उसे पहचाना नहीं गया था (मत्ती 14:26), और वह भीड़ में से निकल गया था। जब वे उसे मार डालने के लिए ढूंढ़ रहे थे (लूका 4:29, 30)। वह पानी पर भी चला (मत्ती 14:26), जो कि बिना ईश्वरीय सामर्थ की सहायता के शारीरिक देह के लिए करना असम्भव है।

अपनी सेवकाई के आरम्भ में, यीशु ने अपनी देह के जी उठने की भविष्यवाणी की थी। उसने कहा था, ''इस मन्दिर को ढहा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा'' (यूहन्ना 2:19)। यहूदियों को लगा था कि वह यरूशलेम के मन्दिर की बात कर रहा है, ''परन्तु उस ने अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था'' (यूहन्ना 2:21)। उसके चेलों को उसकी प्रतिज्ञा मरे हुओं में से उसके जी उठने के बाद याद आई और उन्होंने विश्वास किया (यूहन्ना 2:22)। यीशु अपनी देह के जी उठने में विश्वास रखता था और उसने इसकी भविष्यवाणी की थी। यदि उसकी देह जी नहीं उठी, तो वह एक झूठा भविष्यवक्ता था।

यीशु ने पर्याप्त सबूत दिया कि जी उठने के बाद वाली उसकी देह वही देह थी, जिसमें वह क्रूस पर मरा था, क्योंकि उसकी देह में अभी भी क्रूस पर चढ़ाए जाने के घावों का प्रमाण था (यूहन्ना 20:25-29)। उसकी देह को छुआ जा सकता था (मत्ती 28:9; देखें लूका 24:39; यूहन्ना 20:17, 27), और उसने अपने चेलों को यह साबित करने के लिए कि उसके हड्डी और मांस हैं, उनके साथ खाना खाया (लूका 24:41-43)। उसने उनसे कहा, ''मेरे हाथ और मेरे पांव को देखो, कि मैं वही हूं; मुझे छूकर देखो; क्योंकि आत्मा के हड्डी मांस नहीं होता, जैसा मुझ में देखते हो'' (लूका 24:39)। इस प्रकार यीशु ने दिखाया कि उसकी जी उठी देह वही देह थी जो क्रूस से उतारी गई और कब्र में रखी गई थी। इम्माउस के मार्ग पर जा रहे दो चेलों ने उसे नहीं पहचाना, क्योंकि उनकी आंखें उसे पहचानने के लिए बन्द कर दी गई थीं (लूका 24:16) न कि इसलिए कि उसे पहचाना नहीं जा सकता था। बाद में उनकी आंखें खुल जाने पर उन्होंने उसे पहचान लिया था (लूका 24:31)। यदि वह बिल्कुल ही अलग था, तो उनकी आंखों के खुलने से भी वह उसे पहचान नहीं सकते थे और उन्हें विश्वास नहीं होता कि वह जी उठा है।

यीशु ने काफ़ी लोगों पर अपने आप को प्रकट किया कि उसका जी उठना किसी प्रकार से संदेहास्पद नहीं हो सकता। पौलुस ने एक ही समय में पांच सौ से अधिक लोगों सहित

कई गवाहों के बारे में बताया (1 कुरिन्थियों 15:3-7)। यदि किसी वकील के पास दो विश्वसनीय गवाह हों, जिनकी गवाही आपस में मेल खाती हो, तो उसका केस हल हो जाता है। न्यायालय में, इतने गवाहों की गवाही के आधार पर यीशु देह में जी उठने का केस जीत जाएगा और एक विश्वसनीय घटना मानी जाएगी।

क्या जी उठेगा?

क्या हमारा पुनरुत्थान भी वैसा ही होगा जैसा यीशु का था? क्या हमारी देहें जिलाई जाएंगी? यदि हमारी देहें जिलाई जाएंगी, तो वे कैसी होंगी? क्या हमारे प्राण और आत्माएं हमारी देहों के साथ फिर से मिल जाएंगे?

मृत्यु होने पर, देह को कब्र में रख दिया जाता है (अय्यूब 21:32) और यह मिट्टी में मिल जाती है (उत्पत्ति 3:19), परन्तु प्राण और आत्मा के साथ ऐसा नहीं होता। वह देह को छोड़कर (देखें उत्पत्ति 35:18; सभोपदेशक 12:7; 1 राजा 17:21, 22; लूका 23:46; याकूब 2:26) अधोलोक के संसार में चली जाती है (लूका 16:22, 23)।

पुनरुत्थान के समय, कब्रों में पड़ी देहें यीशु के स्वर को सुनकर बाहर आ जाएंगी (यूहन्ना 5:28, 29)। प्राण और आत्मा कब्र में नहीं होंगे, इसलिए केवल देह ही जी उठेगी। प्राण और आत्मा, कब्र में नहीं, बल्कि अधोलोक में होने के कारण, अधोलोक से बाहर आएंगे (प्रकाशितवाक्य 20:13)। अधोलोक में रहते हुए, वे अभी भी होश में हैं और जीवित हैं। यदि देह जिलाई नहीं जाती, तो पुनरुत्थान भी नहीं होगा। यदि देह नहीं जिलाई जानी थी, तो यीशु को अलग से देहों को जिलाने के लिए पृथ्वी पर आने की आवश्यकता नहीं होनी थी; इसके बजाय उसे अधोलोक में जाकर प्राणों और आत्माओं को जिलाने की आवश्यकता होनी थी। परन्तु यीशु मरे हुओं को उनकी कब्रों से इकट्ठे करने वापस आ रहा है (1 थिस्सलुनीकियों 4:16; देखें यूहन्ना 5:28, 29), जो कि एक अच्छा संकेत है कि देह जिलाई जाएगी।

यीशु के वापस आने से न केवल देह के जी उठने का संकेत है, बल्कि बाइबल यह भी कहती है कि देह को जीवित किया जाएगा: ''और यदि उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है; तो जिस ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा'' (रोमियों 8:11; देखें 8:23)। नाशवान, स्वाभाविक देह ही ''यह'' है, जिसे मृत्यु के समय उतारा जाता है परन्तु ''यह'' वह भी है, जिसे आत्मिक और अविनाशी बनाकर जिलाया जाएगा। ''यह'' वही देह है, ''यह'' को ही एक आत्मिक अस्तित्व में बदला जाएगा (1 कुरिन्थियों 15:51)। यदि देह को जिलाकर इसे आत्मिक देह में नहीं बदला जाता, तो हम ''क्षण भर में, पलक मारते ही'' (1 कुरिन्थियों 15:51-54) नाशवान से अविनाशी, मरनहार से अमरता में ''सभी [जीवित और मरे हुए] बदलेंगे'' नहीं। प्राण और आत्मा अधोलोक में रहते हैं, इसलिए जी उठने की बात केवल देह के लिए है।

कुछ लोग यह कहते हुए कि नष्ट हो चुकी देह का जी उठना असम्भव है, आपत्ति जताते हैं। यह आपत्ति परमेश्वर की सामर्थ से (मरकुस 12:24) और इस तथ्य से कि

परमेश्वर ने कुछ समय पहले मरे हुए लोगों की कब्रें खोलकर उनमें जीवन डाल दिया नज़रअंदाज हो जाती है। यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय जी उठने वाले लोग अपने पुनरुत्थान के बाद यरूशलेम में गए थे (मत्ती 27:52, 53)। यदि परमेश्वर उन मरे हुओं को जिला सकता था, तो वह समय के अन्त में हमें भी जिला सकता है।

हमारी देहें कैसी होंगी?

जी उठी देह इस वर्तमान देह जैसी नहीं होगी (1 कुरिन्थियों 15:37)। यह एक अविनाशी और आत्मिक देह होगी, महिमा और सामर्थ से भरी जो उस स्वर्गीय के स्वरूप में बदल गई होगी (1 कुरिन्थियों 15:48, 49)। यह शारीरिक देह नहीं होगी, क्योंकि "मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न विनाश अविनाशी का अधिकारी हो सकता है" (1 कुरिन्थियों 15:50)। हम यीशु के जैसे होंगे (1 यूहन्ना 3:2), जो "अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा यह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा" (फिलिप्पियों 3:21)। आत्मिक जीव होने के कारण हम स्वर्गदूतों के जैसे होंगे और शादी-ब्याह नहीं करेंगे (मत्ती 22:30; देखें मरकुस 12:25; लूका 20:34-36)।

हमारी बनावट अब शारीरिक नहीं होगी। पुनरुत्थान के समय हम आत्मिक, अनादि आयाम जो मनुष्य की आंख के लिए अदृश्य हैं (2 कुरिन्थियों 4:18), परमेश्वर के राज्य के अस्तित्व में जहां हम मर नहीं सकते, में प्रवेश करेंगे (लूका 20:36)।

पुनरुत्थान होने पर क्या होगा?

मरे हुओं के जी उठने के बारे में कई प्रश्न पूछे गए हैं जैसे: कौन जी उठेगा? पुनरुत्थान कब होगा? पुनरुत्थान के बाद हम कैसे होंगे? नये नियम में निम्न उत्तर दिए गए हैं:

(1) यह यीशु के दोबारा आने पर होगा (1 कुरिन्थियों 15:22, 23; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18)।

(2) *सभी* मृतक जिलाए जाएंगे, चाहे वह भले हों या बुरे (यूहन्ना 5:28, 29; देखें प्रेरितों 24:15)।

(3) धर्मी और दुष्ट एक ही समय उसी घड़ी जिलाए जाएंगे (यूहन्ना 5:28, 29)।

(4) पुनरुथान के समय पृथ्वी पर लोग बस रहे होंगे (1 कुरिन्थियों 15:51; 1 थिस्सलुनीकियों 4:17)।

(5) यह जीवितों को पृथ्वी पर से उठाए जाने से पहले होगा (1 थिस्सलुनीकियों 4:16, 17)।

(6) जी उठे मृतक और जीवित लोग बादलों में यीशु के साथ इकट्ठे मिलेंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:17)।

(7) यीशु और महादूत का स्वर सुनाई देगा और देहों को उनकी कब्रों से उठाने के लिए आवाज़ दी जाएगी (यूहन्ना 5:25, 28; 1 कुरिन्थियों 15:51, 52; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16)।

वही पुकार जिसने लाज़र को जिलाया, सभी मरे हुओं को जिलाएगी (यूहन्ना 11:43)।

(8) परमेश्वर की सामर्थ मरे हुओं को जिलाएगी (1 कुरिन्थियों 6:14; देखें 2 कुरिन्थियों 1:9)। पिता और पुत्र दोनों के पास यह सामर्थ है (यूहन्ना 5:21); परन्तु जैसे पिता ने पुत्र के द्वारा संसार की सृष्टि की (1 कुरिन्थियों 8:6), वैसे ही वह यीशु के द्वारा मरे हुओं को जिलाएगा (2 कुरिन्थियों 4:14)।

(9) जी उठी देहें तुरन्त अविनाशी देहों में बदल जाएंगी (1 कुरिन्थियों 15:51-54)।

पुनरुत्थान के दिन होने वाली घटनाओं में मुख्य यही होंगी। यह एक भयानक समय, बहुत बड़ा अनुभव होगा-यदि हम उस दिन के लिए तैयार हैं।

सारांश

यीशु के वापस आने पर सभी मरे हुओं की आत्माओं को नई आत्मिक, अनादि देहों से मिलाने पर जी उठेंगी। इस प्रकार मृत्यु पर विजय पा ली जाएगी और विजय उसे निगल लेगी, वह विजय जो यीशु के द्वारा मिली है (1 कुरिन्थियों 15:57; देखें यूहन्ना 11:25; प्रेरितों 4:2)। यह बड़ा दिन अन्त के दिन आएगा। जब यीशु ''पृथ्वी की फसह काटने'' के लिए वापस आएगा। आइए हम अपने आप को तैयार रखें, क्योंकि पता नहीं वह कब वापस आ जाए!